• रहस्य...

मध्य कैलाश मंदिर

भारत मंदिरों का देश कहा जाता है। यहां कई प्राचीन और रहस्यमयी मंदिर हैं, जिनके रहस्य आज तक कोई नहीं जान पाया है। ऐसा ही एक रहस्यमयी और अनोखा मंदिर दक्षिण के राज्य तमिलनाडु में है। इस मंदिर का नाम है मध्य कैलाश मंदिर। ये प्रसिद्ध मंदिर दक्षिण चेन्नई के नादुक्कयिलाई में स्थित है। इस मंदिर में विघ्नहर्ता भगवान गणेश और श्रीराम के परम भक्त हनुमान जी आधे-आधे विराजते हैं। हालांकि, मंदिर का मुख्य देवता वेंकट आनंद विनायकर (गणेश जी) को माना जाता है, जिनका भक्तों के लिए अत्यंत खास महत्व है।

इस अनोखे मंदिर में आधे गणेश और आधे हनुमान जी की प्रतिमा स्थापित है। मध्य कैलाश प्रतिमा आधी गणेश जी और आधी हनुमान की प्रतिमा के लिए ही काफी मशहूर है। मंदिर में स्थापित इस मूर्ति को लोग आद्यंत प्रभु के नाम से जानते हैं। आद्यंत प्रभु के

नाम का अर्थ है कि ऐसे प्रभु जिनका न उद्गम है और न ही कोई अंत-आद्यंत प्रभु भगवान गणेश और हनुमान जी के रूप में विलीन हैं।

प्रतिमा में दाएं गणेश जी हैं, तो बाईं ओर हैं हनुमान जी-हिंदू शास्त्रों और पुराणों में हनुमान जी को चिरंजीवी बताए गए हैं, जबकि भगवान शिव और माता पार्वती के पुत्र गणेश जी भी दो बार जन्मे थे। इस मंदिर में जो प्रतिमा है उसमें दाहिने ओर गणेश जी हैं, तो बाईं ओर हनुमान जी हैं। मंदिर में स्थापित ये आद्यंत प्रभु का कुंभाभिषेकम साल 1994 में पूरा हुआ था। तब से लेकर आज तक दुनिया भर से श्रद्धालु आद्यंत प्रभु की अद्भुत और अनोखी प्रतिमा के दर्शन करने इस मंदिर में आते हैं।

प्रतिमा की स्थापना की कहानी है बड़ी रोचक-मंदिर में स्थापित गणेश जी और हनुमान जी की इस प्रतिमा की स्थापना की कहानी बड़ी रोचक है। मंदिर के पुजारियों के अनुसार, मंदिर के ही एक अधिकारी को इस रूप के दर्शन प्राप्त हुए, जिसके बाद इस प्रतिमा की रचना की गई थी। आद्यंत प्रभु की आरती कपूर से की जाती है। इसके बाद हर दोपहर को पुजारी प्रतिमा को स्नान कराते हैं और गीले कपड़ों में ही अनुष्ठान की शुरुआत कर देते हैं। यहां भगवान शिव, भगवान विष्णु और भगवान सूर्य का भी मंदिर है।

• शिवलिंग...

शिव की पूजा

शिव लिंग हिन्दू लोगों की धार्मिक आस्था का प्रतीक है। शिव भक्तों के लिए यह भगवान शिव का प्रतिमा विहीन चिन्ह है। यह आमतौर पर हिन्दू मंदिरों में शिवभक्तों के लिए भगवान शिव की छवि को प्रकट करता है। शिव लिंग प्राय: छोटे और बड़े सभी शिव मंदिरों में पाये जाते हैं। कई स्थानों पर ये प्राकृतिक रूप से भी प्रकट होते हैं और बाद में आस्था का प्रतीक बन जाते हैं। आमतौर पर शिव लिंग का ऊपर का हिस्सा एक गोलाकार मूर्ति के रूप में होता है, जिसे परशिव कहते हैं और निचला हिस्सा जिसे पीठम पराशक्ति कहते हैं। ऐसा कहा जाता है कि पराशिव और पराशक्ति भगवान शिव की दो परिपूर्णताएं दर्शाती हैं। ये दोनों मिलकर सूक्ष्मब्रह्मांड और महाब्रह्मांड के मिलन के प्रतीक हैं। सोमवार का दिन भगवान शिव की पूजा-आराधना को समर्पित माना जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, इस दिन सच्चे मन से भोलेनाथ की पूजा करने और शिवलिंग पर जल अर्पित करने से भक्तों की मनोकामनाएं पूरी होती हैं। साथ ही जीवन के दुख-दर्द दूर होते हैं और भगवान शिव का आशीर्वाद प्राप्त होता है। ऐसे में हर सोमवार मंदिरों में बड़ी संख्या में श्रद्धालु शिवलिंग पर जल चढ़ाने पहुंचते हैं। हालांकि, शास्त्रों में शिवलिंग पर जल चढ़ाने के भी कुछ विशेष नियम बताए गए हैं.

- शिवलिंग पर जल अर्पित करते समय दिशा का विशेष ध्यान रखना चाहिए। जल चढ़ाते समय हमेशा उत्तर या पूर्व दिशा की ओर मुंह रखना शुभ माना जाता है।
- शिवलिंग पर जल हमेशा तांबे, चांदी या कांसे के पात्र से चढ़ाना चाहिए। स्टील या लोहे के पात्र का उपयोग करने से बचना चाहिए। इनमें भी तांबे का पात्र सबसे उत्तम माना गया है। हालांकि, एक बात का विशेष ध्यान रखें कि तांबे के पात्र में दूध नहीं चढ़ाना चाहिए।
- शिवलिंग पर जल चढ़ाने का भी एक विशेष क्रम होता है- सबसे पहले जलाधारी की सीधी ओर स्थित भगवान गणेश को जल अर्पित करें।
- इसके बाद बाईं ओर विराजमान भगवान कार्तिकेय को जल चढ़ाएं।
- फिर बीच में माता सुंदरी और सर्प पर जल अर्पित करें। इसके बाद पूरे शिवलिंग पर गोल-गोल घुमाते हुए श्रद्धा और भक्ति के साथ जल चढ़ाएं। यह विधि शास्त्रों में शुभ मानी गई है।
- जल चढ़ाते समय करें इस मंत्र का जाप-भगवान शिव की पूजा में मंत्र जाप का विशेष महत्व होता है। शिवलिंग पर जल अर्पित करते समय 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र का लगातार जाप करना चाहिए। माना जाता है कि यह पंचाक्षरी मंत्र भगवान शिव को अत्यंत प्रिय है और इसके जाप से मन को शांति तथा सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त होती है।

ये हैं बगलामुखी माता के पावन धाम

मान्यता है कि मां बगलामुखी की पूजा या फिर कहें साधना किसी पवित्र स्थान पर किसी सिद्ध पुरुष के निर्देशन में करने पर शीघ्र सफल हो जाती है। मां की साधना हमेशा किसी सिद्ध गुरु की आज्ञा के बाद उनके निर्देशन में ही करना चाहिए।

साधना के दौरान गुरु के सभी निर्देश और पूजा के नियमों का पालन करना चाहिए। साधक को देवी की पूजा और उनके लिए व्रत आदि रखते समय ब्रह्मचर्य का पूरी तरह से पालन करना चाहिए...

सनातन परंपरा में मां बगलामुखी की साधना जीवन से जुड़े सभी भय को दूर करके शत्रुओं पर विजय दिलाने वाली मानी गई है। चूंकि माता का रंग सोने के समान पीला है, इसलिए देवी के भक्त उन्हें पीतांबरा कहकर बुलाता है। हिंदू मान्यता के अनुसार मां बगलामुखी की पूजा करने वाले भक्त को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में जीत हासिल होती है। हिंदू मान्यता है कि मां बगलामुखी की पूजा या फिर कहें साधना किसी पवित्र स्थान पर किसी सिद्ध पुरुष के निर्देशन में करने पर शीघ्र सफल हो जाती है। मां की साधना हमेशा किसी सिद्ध गुरु की आज्ञा के बाद उनके निर्देशन में ही करना चाहिए। साधना के दौरान गुरु के सभी निर्देश और पूजा के नियमों का पालन करना चाहिए। साधक को देवी की पूजा और उनके लिए व्रत आदि रखते समय ब्रह्मचर्य का पूरी तरह से पालन करना चाहिए। पूजा में पीले रंग का विशेष प्रभाव माना गया है। ऐसे में देवी साधना करने वाले साधक को पूजा के दौरान पीले रंग के वस्त्र धारण करना चाहिए। मां बगलामुखी की पूजा में प्रयोग लाई जाने वाली अधिकांश सामग्री भी पीले रंग की होती है। बगलामुखी माता के देश में कई ऐसे पावन धाम हैं, जहां पूरे साल भक्तों की भारी भीड़ जुटी रहती है. माता के जिन सिद्ध मंदिरों में माथा टेकते ही संतरी से लेकर मंत्री तक के सपने पूरे होते हैं और जहां पूजा करने के बाद ज्ञात-अज्ञात शत्रु का भय दूर हो जाता है, आइए तंत्र और मंत्र को सफल बनाने वाली इस देवी बगलामुखी के पावन धाम के बारे में विस्तार से जानते हैं।

● **दतिया की मां पीतांबरा**-मां बगलामुखी के 5 पावन धाम में सबसे पहले बात करते हैं दतिया स्थित माम पीतांबरा के शक्तिपीठ की, जहां पर पूरे साल शक्ति के साधक माता की साधना-आराधना के लिए पहुंचते हैं। चूंकि माता रंग स्वर्ण के समान पीले रंग की आभा लिए हुए है, इसी मां बगलामुखी को पीतांबरा भी कहा जाता है। हिंदू मान्यता के अनुसार देवी पीतांबरा का यह पावन धाम महाभारतकाल का बताया जाता है। चुनाव के दौरान देवी के इस मंदिर में विजय का आशीर्वाद पाने के लिए राजनेताओं की भीड़ लग जाती है। मान्यता है कि माता अपने दरबार में आए हर भक्त की झोली खुशियों से भरती हैं। मां बगलामुखी का यह मंदिर मध्य प्रदेश में झांसी और गवालियर के बीच में पड़ता है।

● **बनखंडी, हिमाचल**-मां बगलामुखी का यह मंदिर हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में स्थित है। हिंदू मान्यता के अनुसार मां बगलामुखी के इस पावन धाम पर जाकर सच्चे मन से साधना करने पर देवी विजय का आशीर्वाद बरसाती हैं। मां बगलामुखी के इस मंदिर में भी पूरे साल आम आदमी से लेकर खास आदमी तक पहुंचते हैं। माता के इस मंदिर में अधिकांश लोग कोर्ट-कचहरी से जुड़े मामले में विजय पाने या फिर अपने जीवन में आने वाली तमाम बाधाओं को दूर करने की कामना लिए यहां पहुंचते हैं।

● **मध्य प्रदेश का नलखेड़ा मंदिर**-मध्य प्रदेश के नलखेड़ा नामक स्थान पर मां बगलामुखी का पावन धाम है। जिसके बारे में मान्यता है कि इसे महाभारत काल में पांडवों ने बनवाया था। हिंदू मान्यता के अनुसार इस मंदिर में मां बगलामुखी की स्वयंभू प्रतिमा है। स्थानीय लोग मां बगलामुखी को सत्तादात्री देवी के रूप में पूजते हैं. यहां पर भी बड़ी संख्या में राजनेता विजय का आशीर्वाद पाने के लिए विशेष साधना करने के लिए पहुंचते हैं। माता का आशीर्वाद पाने के लिए पीली चीजों को विशेष रूप से पूजा में अर्पित किया जाता है।

● **मां बमलेश्वरी, छत्तीसगढ़**-मां बगलामुखी के प्रसिद्ध मंदिरों में से एक छत्तीसगढ़ राज्य के राजनांदगांव जिले में स्थित है। पहाड़ी पर स्थित देवी के इस मंदिर को लोग मां बमलेश्वरी के नाम से पूजा करते हैं। माता के इस पावन धाम में चैत्र और आश्विन मास में बड़ा मेला लगता है. शक्ति के इस पावन धाम में मां बगलामुखी के इस दिव्य स्वरूप की पूजा करने पर साधक की हर कामना शीघ्र ही पूरी होती है।

● **कोटला का बगलामुखी मंदिर**-मां बगलामुखी का यह प्रसिद्ध मंदिर हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में स्थित है। पाठनकोट के रास्ते में पड़ने वाले इस पावन धाम में मां बगलामुखी की पूजा करने के लिए लोग दूर-दूर से पहुंचते हैं। पहाड़ी पर स्थित यह मंदिर दो नदियों के संगम स्थल पर बना हुआ है। मां बगलामुखी का यह पावन धाम चारों ओर से जंगलों से घिरा हुआ है। माता के मंदिर तक पहुंचने के लिए कई सीढ़ियां चढ़कर जाना होता है।

■ पं. नित्यानंद

• पूजा-पाठ...

मंदिर

वास्तु शास्त्र के अनुसार, मंदिर हमेशा शांत, स्वच्छ और सम्मानजनक स्थान पर होना चाहिए। सीढ़ियों के नीचे लगातार लोगों का आना-जाना लगा रहता है। ऐसे में पूजा स्थल की पवित्रता प्रभावित हो सकती है। शास्त्रों के अनुसार, पूजनीय देवी-देवताओं के स्थान के ऊपर से पैर रखकर गुजरना उनका घोर अनादर माना जाता। इससे उस स्थान की पवित्रता और सकारात्मक ऊर्जा पूरी तरह नष्ट हो जाती है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, देवी-देवताओं का स्थान घर में सबसे सम्मानित जगह पर होना चाहिए। मंदिर ऐसी जगह होना चाहिए जहां व्यक्ति शांत मन से बैठकर पूजा और ध्यान कर सके। सीढ़ियों के नीचे बने मंदिर में अक्सर पूरी जगह नहीं होती, जिससे पूजा के दौरान बार-बार ध्यान भटकता है। मान्यता है कि भगवान के स्थान को ऊंचा और साफ-सुथरा रखना शुभ माना जाता है, जबकि सीढ़ियों के नीचे का क्षेत्र इसके विपरीत माना जाता है। वास्तु शास्त्र में माना जाता है कि यदि मंदिर गलत स्थान पर बनाया जाए तो घर में मानसिक तनाव जैसी समस्याएं पैदा हो सकती हैं। वास्तु विशेषज्ञों का मानना है कि पूजा घर की गलत स्थिति घर के वातावरण को प्रभावित कर सकती है और सकारात्मक ऊर्जा के प्रवाह में रुकावट पैदा कर सकती है।

• उधार...

ऐसा कहा जाता है कि बरसात के मौसम में या यात्रा के दौरान दूसरों से छाता उधार लेने से आर्थिक नुकसान हो सकता है, यानी पैसों के नुकसान की संभावना रहती है। किसी से घड़ी गिफ्ट में लेना या उधार लेना गलत है। अगर आपको घड़ी मिलती है, तो आपकी कार्य योजनाएं पूरी तरह से विफल हो सकती हैं। महिलाओं के पास नई झाड़ू न हो और वे किसी और से ले लें, तो उस घर में हर तरह की गरीबी की संभावना बढ़ जाती है. झाड़ू को लक्ष्मी का रूप माना जाता है।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित